UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12	April 2019	No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

JGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 April 2019 No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- **पारसी-हिंदी रंगमंच और हिन्दुस्तानी सिनेमा** 563-569
  जयन्त रैना, शोध छात्र, हिन्दी विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- **गांधी की दृष्टि में शिक्षा : नैतिक एवं आत्मिक उत्थान के कारक के रूप में** 570-573
  डॉ. प्रतिमा सिंह, अतिथि प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
- **वैदिकछन्दांसि : महत्त्वं स्वरूपञ्च** 574-580
  डॉ. आचार्य बृहस्पति मिश्र, प्रवक्ता, संस्कृत महाविद्यालय, श्री नयनादेवी जि. बिलासपुरम्, हि.प्र.

UGC Approved Journal No - 40957
ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :
Indukant Dixit

Executive Editor :
Shashi Bhushan Poddar

Editor :
Reeta Yadav

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

J I G Y A S A

AN INTERDISCIPLINARY REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume XI September 2018 No. 4

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- **निर्वाचन क्षेत्र गाजीपुर में लोकसभा निर्वाचन 2009 का विश्लेषण** 292-294
  डॉ. श्री प्रकाश सिंह, पूर्व शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय रीवां म.प्र.)
- **अभयदेवसूरि द्वारा मीमांसा दर्शन में स्वीकृत प्रमाण-लक्षण के विशेषणभूत 'अनधिगत अर्थ अधिगन्तृत्व' का खण्डन** 295-299
  डॉ. प्रतिमा सिंह, अतिथि प्रवक्ता, दर्शनशास्त्र विभाग, वसन्त कन्या महाविद्यालय, कमच्छा, वाराणसी
- **मानव जीवन में योगदर्शन का महत्व** 300-308
  नैन्सी गुप्ता, शोधछात्रा, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- **संस्कृत वाङ्मय में राष्ट्रप्रेम की अवधारणा** 309-312
  नेहा राय, शोध छात्रा, आर.एस.एस. कैम्पस, भोपाल
- **सामराजीयकाव्यप्रयोजनम्** 313-316
  राकेशरौशनः, शोधच्छात्रः, साहित्यविभागे, संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्काये, काशीहिन्दूविश्वविद्यालये, वाराणस्याम्
- **ईश्वर और नव-भौतिकी** 317-322
  तरू तिवारी, शोध-छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- **ब्रह्मसूत्र और गौड़ीय सम्प्रदाय का दर्शन** 323-327
  दीपक राजटा, शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- **रघुवंश महाकाव्य में नदी : एक विमर्श** 328-333
  नीतू सिंह, शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ.प्र.
- **मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम (जननी सुरक्षा योजना के विशेष संदर्भ में)** 334-341
  सुनील कुमार, शोध छात्र, काय चिकित्सा विभाग, आयुर्वेद संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- **मेषपाल एवं ग्वाल जातियों के सांस्कृतिक जीवन के विविध पक्षो का अध्ययन** 342-346
  डॉ. अंगद प्रसाद गुप्त, प्राचार्य, श्री जमुनाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चित्तबड़ागांव-बलिया (उ.प्र.)

UGC Approved Journal No - 49297
ISSN 2231 - 4113

Śodha Pravāha

A Multidisciplinary Refereed Research Journal

Chief Editor
Dr. S. K. Tiwari
Editor
Dr. S. B. Poddar

Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 2231-4113

Śodha Pravāha

(A Multidisciplinary Refereed Research Journal)

Editor : S. B. Poddar

VOL. VII

ISSUE 4

OCTOBER 2017

Chief Editor : S. K. Tiwari

Academic Staff College
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005, INDIA

E-mail : sodhapravaha@gmail.com www.sodhapravaha.blogspot.com

- बिहार के पृथक प्रांत के निर्माण का इतिहास — 175-177
  सुजाता कुमारी, शोध छात्रा, इतिहास विभाग, जे.डी. वीमेन्स कॉलेज, पटना
- महिला सशक्तिकरण एवं गाँधीवादी दृष्टिकोण — 178-181
  बृजेश कुमार उपाध्याय, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, हरिश्चन्द्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी
- शती प्रथा एक सामाजिक अभिशाप — 182-185
  प्रो. (डॉ.) कुमकुम कुमारी, स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, जे.डी. वीमेन्स कॉलेज, पटना
- कुमारिलभट्ट के अनुसार आत्मा का स्वरूप — 186-188
  डॉ. राम निवास सिंह
- मध्य एशिया, चीन तथा जापान में बौद्ध धर्म का प्रसार — 189-191
  देवांशु कुमार सिंह, शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
- प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय विज्ञान के वैज्ञानिक आयामों का विकासात्मक अध्ययन — 192-197
  डॉ. सिद्धार्थ शुक्ला, शिक्षा संकाय, अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल
- भाषा द्वारा व्यक्तित्व पहचान — 198-200
  धनजी प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, भाषा प्रौद्योगिकी, म.गा.अं.हिं.वि., वर्धा
- रौलेट एक्ट एवं लाहौर का जन-आन्दोलन — 201-205
  राजकुमार कसेरा, (जे.आर.एफ. इतिहास), शोध छात्र जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्य प्रदेश
- भारतीय कारागार व्यवस्था की दशा और दिशा : एक समीक्षात्मक दृष्टिकोण — 206-211
  डॉ. पवन कुमार मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
- बहुजन समाज पार्टी का संरचनात्मक संगठन : एक विश्लेषण — 212-214
  डॉ. अशोक कुमार, रामनरेश स्मारक डिग्री कॉलेज, नगवा, धानी, महराजगंज
- भारत में लोहे की प्राचीनता — 215-216
  डॉ. रेखा सिंह
- शूद्रक कृत मृच्छकटिकम् में काव्यसौन्दर्य — 217-219
  डॉ. किरन वर्मा, पूर्व शोधछात्रा, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- हिन्दी उपन्यासों में शिल्प विधान का महत्व — 220-224
  डॉ. मैनेजर नाथ पाण्डेय, सहायक शिक्षक (हिन्दी), रा.कृ.+2उ.वि., कटकमसांडी, जिला-हजारीबाग, झारखण्ड
- दक्षेस का उद्भव एक अध्ययन — 225-229
  डॉ. सीमा सिंह, पूर्व शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- जैन दर्शन में स्त्रीमुक्ति विमर्श (तत्वबोधविधायिनी के विशेष सन्दर्भ में) — 230-233
  प्रतिमा सिंह, शोध छात्रा, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री चेतना — 234-236
  अलका बाजपेयी, शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, एम.एल.बी, कॉलेज, ग्वालियर
  डॉ. अनुभा पाण्डेय, शोध निदेशिका

UGC Approved Journal No - 47168, 49367
ISSN 2231 – 413X

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

http://shodhprerak.blogspot.com

Vol. - VII, Issue - 4, October 2017

Chief Editor :
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors :
Reeta Yadav
Pradeep Kumar

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Dr. Reeta Yadav
Dr. Pradeep Kumar

Volume VII | **Issue 4** | **October** | **2017**

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW

Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747

Cite this Volume as S/P, Vol. VII, Issue 4, October 2017

- अन्तरिक्षाधिपति इन्द्र : एक विमर्श 258-260
  श्रद्धा सिंह, शोधच्छात्रा, संस्कृत-विभाग, कला-संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- माधव-द्वैतवाद सम्प्रदाय में आत्मा का स्वरूप 261-264
  डॉ. राम निवास सिंह,
- पर्यावरणचिन्तने औपनिषदिकी दृष्टिः 265-271
  खुशबू शुक्ला, शोधच्छात्रा, विशिष्टसंस्कृताध्ययनकेन्द्रम, जवाहरलालनेहरूविश्वविद्यालयः, नवदेहली-110067
- बौद्ध धर्म में महिलाएँ 272-275
  देवांशु कुमार सिंह, शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007
- भोजपुरी : समकालीन दृष्टि 276-282
  डॉ. अनीता, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी) कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
- कालिदास के महाकाव्यों में नाटकीय संवाद 283-284
  अर्चना राय, शोधार्थी, संस्कृत, एम.एल.के.पी.जी. कालेज, बलरामपुर।
- हिंदी और कन्नड़ के समानरूपी एवं समानार्थी शब्द 285-290
  डॉ. एच.ए. हुनगुंद, सहायक प्रोफेसर, भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वीविद्यालय, वर्धा
- भारतीय दल प्रणाली : एक अध्ययन 291-294
  डॉ. अशोक कुमार, रामनरेश स्मारक डिग्री कॉलेज, नगवा, धानी, महराजगंज
- सैन्धव सभ्यता की देन 295-296
  डॉ. रेखा सिंह,
- कला और समाज का आपसी तालमेल 297-301
  डॉ. सुस्मिता लख्यानी, सहायक आचार्य, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय
  अञ्जनी कुमार, शोध छात्र, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय
- परवर्ती नाटकों पर कृष्णकथा का प्रभाव 302-303
  अरुण कुमार, शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- सुशासन की भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा का तुलनात्मक अध्ययन 304-306
  संजय शर्मा, शोधार्थी राजनीति विज्ञान, पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ.प्र.)
- सार्क के उद्देश्यों का समीक्षात्मक अध्ययन 307-311
  डॉ. सीमा सिंह, पूर्व शोध छात्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- किशोरावस्था के शैक्षिक विकास पर अभिभावकों की भूमिका 312-316
  कुमार अमित, शोध छात्र, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
- तत्वबोधविधायिनी में प्रतिपादित ध्यान का स्वरूप 317-319
  प्रतिमा सिंह, शोध छात्रा, दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- सावयव द्रव्य का वैशेषिक दर्शन व विज्ञान के आलोक में विवेचन 320-330
  ओमप्रकाश, शोधच्छात्र, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067

ISSN 0972-1002

श्रमण
ŚRAMAṆA

A Quarterly Refereed Research Journal of Jainology

Vol. LXX No. II April-June 2019

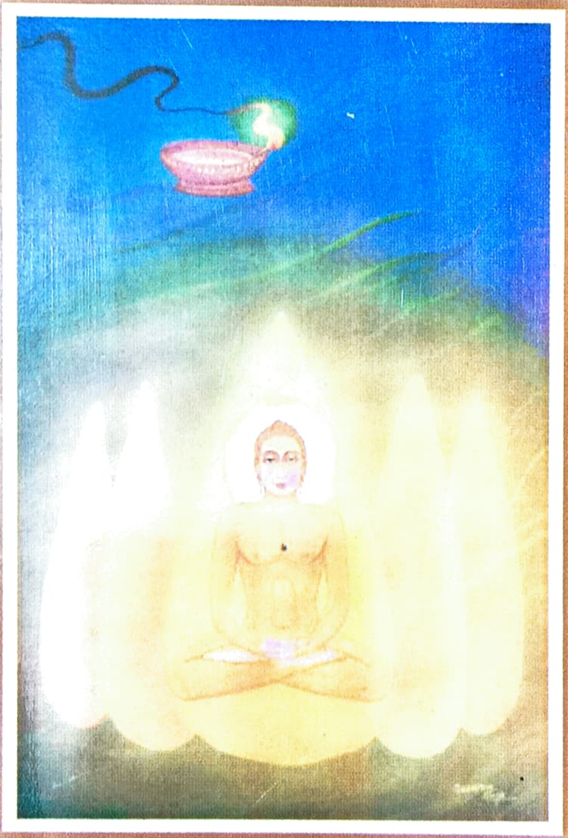

निर्धूमवर्तिपवर्जित-तैलपूरः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः।।

भक्तामरस्तोत्र-16

Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi

Established : 1937

श्रमण

ŚRAMAṆA

(Since 1949)

A Quarterly Referred Research Journal of Jainology

Vol. LXX	No. II	April-June, 2019

Editor

Dr. Shriprakash Pandey

Associate Editors

Dr. Om Prakash Singh **Dr. Sanjay Kumar Singh**

Parshwanath Vidyapeeth, Varanasi

(Established: 1937)

(Recognized by B. H. U.as an External Research Centre)

Address:

I T I Road, P.O., B. H. U , Varanasi 221005

Email: pvpvaranasi@gmail.com

Website: www.pv-edu.org

Phone: 0542-2575890

Mob: 9936179817

Contents

१. उत्तराध्ययन सूत्र के विनयश्रुत का भाषागत एवं दार्शनिक वैशिष्ट्य 01-11
प्रो. प्रद्युम्नशाह सिंह

२. अहिंसा का प्रशिक्षण बनाम विश्वशान्ति 12-24
डॉ० भागचन्द्र जैन 'भागेन्दु'

३. जैन इतिहास-लेखन : ऐहोल प्रशस्ति एवं बिजोलिया लेख के विशेष सन्दर्भ में 25-36
डॉ. अर्पिता चटर्जी

४. तत्त्वबोधविधायिनी : एक अन्तरावलोकन 37-43
डॉ. प्रतिमा सिंह

५. जैन तीर्थंकर अंकन, प्रतीक और पर्यावरण 44-48
डॉ. आनन्द कुमार शर्मा

6. **The Concept of Time and its relationship to change in Kundakunda's Philosophy** 49-65
Ana Bajzelj Bevelacqua

7. **Contributions of Curious Gaṇadhara Gautama to Jaināgama** 66-74
Dr. Samani Shashi Pragya

8. **Ethics of the Jaina Householder** 75-97
Prof. Kamal Chand Sogani

9. **Is Implication Reducible to Inference?** 98-109
An Exposition of *Arthāpatteḥ Anumāne Antarbhāvaḥ* in Prabhācandra's Prameyakamala-Mārtaṇḍa
Arvind Jaiswal

विद्यापीठ के प्रांगण में 110-119

जैन जगत् 120

anushilana@gmail.com

ISSN 0973 - 8762

ANUŚĪLANA

Research Journal of Indian
Cultural, Social & Philosophical Stream

Hony. Editor : *Mukul Raj Mehta*

VOL. LXXII

Editors

Pramod Kumar Singh **Jayant Upadhyay**

ISSN 0973 - 8762

ANUŚĪLANA

Research Journal of Indian Cultural, Social & Philosophical Stream

Year: 13 2017 Volume LXXII

Editors

Pramod Kumar Singh ***Jayant Upadhyay***

Hony. Editor

Mukul Raj Mehta

DEPARTMENT OF PHILOSOPHY & RELIGION
FACULTY OF ARTS, BANARAS HINDU UNIVERSITY,
VARANASI-221005, INDIA

Reg. No. : 141 / 2004

ISSN 0973 - 8762

ANUŚĪLANA

Research Journal of Indian Cultural, Social & Philosophical Stream

Year: 13 | 2017 | Volume LXXII

Editors

Pramod Kumar Singh

Jayant Upadhyay

Hony. Editor

Mukul Raj Mehta

DEPARTMENT OF PHILOSOPHY & RELIGION
FACULTY OF ARTS, BANARAS HINDU UNIVERSITY,
VARANASI-221005, INDIA

सांख्यीय परम्परा का मूल : 'वियोग–योग'
डॉ० राजेश्वर सिंह 241

स्त्री–स्वातंत्र्य एवं गौतम बुद्ध
डॉ० अर्चना शर्मा 246

इतिहास और आल...
सुरभि त्रिपाठी 253

पातंजलयोग. ...
डॉ० सुरेन्द्र नाथ पा... 256

वेद चतुष्टय में आत्मतत्त्व
रमाशंकर प्रसाद 259

जैन आगम साहित्य में प्रमाण विचार
प्रतिमा सिंह 262

प्रलेस की स्थापना : आन्दोलन के उदय का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ
पवन कुमार सिंह 265

महाकवि शूद्रक के रूपक में हास्य रस
किरन प्रकाश 268

राजगृह परिक्षेत्र का पूर्व उत्तरी कृष्ण मार्जित एवं उत्तरी कृष्ण मार्जित परिवेश, नालन्दा, बिहार 273
हर्ष रंजन कुमार

बीसलदेव रासों में कथानक रूढ़ियाँ
डॉ० द्युति मालिनी 278

गीता का नैतिक दर्शन एवं आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता
सुशीला चन्द्रा 283

स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु महिला संगठनों का योगदान
शिप्रा नन्दन 288

मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववादी सार्त्र : ...

सांख्यीय परम्परा का मूल : 'वियोग–योग' 241
डॉ० राजेश्वर सिंह

स्त्री–स्वातंत्र्य एवं गौतम बुद्ध 246
डॉ० अर्चना शर्मा

इतिहास और आलोचना 253
सुरभि त्रिपाठी

पातंजलयोगः चित्तवृत्तियाँ 256
डॉ० सुरेन्द्र नाथ पाल

वेद चतुष्टय में आत्मबल 259
रमांशकर प्रसाद

जैन आगम साहित्य में प्रमाण विचार 262
प्रतिमा सिंह

प्रलेस की स्थापना : आन्दोलन के उदय का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ 265
पवन कुमार सिंह

महाकवि शूद्रक के रूपक में हास्य रस 268
किरन प्रकाश

राजगृह परिक्षेत्र का पूर्व उत्तरी कृष्ण मार्जित एवं उत्तरी कृष्ण मार्जित परिवेश, नालन्दा, बिहार 273
हर्ष रंजन कुमार

बीसलदेव रासों में कथानक रूढ़ियाँ 278
डॉ० द्युति मालिनी

गीता का नैतिक दर्शन एवं आधुनिक युग में इसकी प्रासंगिकता 283
सुशीला चन्द्रा

स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु महिला संगठनों का योगदान 288
शिप्रा नन्दन

मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववादी सार्त्र : तुलनात्मक अध्ययन 293
डॉ० अमित यादव

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में जनक्रांति चेतना 298
डॉ० संगीता चौधरी

ISSN: 2347-4491
UGC Journal No. 49095
IIJIF Impact Factor: 2.382

Vol. 7 No. 2 Issue 2 April - June, 2019

अयन Ayan

An International Multi-disciplinary Quarterly Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor-in-Chief
DR. BINDU BHUSHAN UPADHYAY

Executive Editor
DR. VIKRAMADITYA RAI

Editors
DR. VIKASH KUMAR
DR. KUMAR VARUN

Registration No. 1589/2008-09 ISSN. 2347-4491 Impact Factor 2.382

अयन्

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

Patron
Prof. I.S. Chouhan
(Ex V.C., Barkatullah University, Bhopal)

Editor in Chief
Dr. Bindu Bhushan Upadhyay

Executive Editor
Dr. Vikramaditya Rai

Editor
Dr. Vikash Kumar
Dr. Kumar Varun

Volume 7 No. 2 (April-June) Issue 2 UGC No. 49095 Year- 2019

Published by
Lok Manav Samaj Kalyan Sansthan
Aurangabad (Bihar)-824101

IN ASSOCIATION WITH
K.R. PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
Baba Shopping Complex, Lanka, Varanasi – 05

❖ अर्वाचीनसंस्कृतकवितायां मानवमूल्यानि

डॉ. राजकुमारमिश्रः 78-83

❖ लोक कला के तत्त्व एवं स्वरूप

गरिमा गुप्ता 84-85

❖ मानसिक-प्रदूषण-निवारणे वैदिकं चिन्तनम्

डॉ. बृहस्पति मिश्रः 86-89

❖ মল্লিকা সেনগুপ্তের সাহিত্য : সামগ্রিক মূল্যায়ন

শিবানী মন্ডল 90-97

❖ অভিজিৎ সেন -এর উপন্যাসে চরিত্রের অন্তর্বয়নঃ সমাজ – সাংস্কৃতিক প্রেক্ষাপটে

জয়শ্রী মান্না 98-102

❖ वर्षा एवं शरद् ऋतु–वर्णन
(श्रीमद्भागवत के परिप्रेक्ष्य में) 103-107

डॉ. मनोज कुमार

❖ भाषाओं के अध्ययन में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग

विजय कुमार 108-110

❖ विद्यार्थियों के सांगीतिक विकास में पारिवारिकपरिवेश की भूमिका

डॉ0 सुषमा शर्मा 111-113

❖ **Role of young voters in Healthy Democracy**

Naveen Kumar Verma 114-117

❖ सत्रहवीं शताब्दी के फ्रांसीसी साहित्य में शास्त्रीय नाटकों का विकास

डी.के. सिंह 118-121

❖ जैन दर्शन में प्रतिपादित कर्मसिद्धान्त

डॉ. प्रतिमा सिंह 122-125

❖ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी एवं परिवर्तित ग्रामीण संरचना

पीयूष राज 126-130

❖ योग दर्शन में कैवल्य का स्वरूप

निखिल कुमार पाठक 131-134

❖ **Changing Discourse of Local Governance**

Diwakar Kumar Jha 135-140

❖ नरेन्द्र मोदी सरकार की विदेश नीति

शुभम राय 141-143

❖ मीडिया एवं भारतीय समाज

महेश कुमार भारती 144-146

❖ **Critical Evaluation of JP's Contribution in Political Reform in time of Emergency** 147-154

Dr. Rajeev Ranjan

❖ सृजनात्मकता से अभिप्राय और कलात्मक क्षेत्र के बीच परस्पर–सम्बन्ध 155-160

विजय भगत

❖ **Concept and Significance of Nabhi Chakra with Special Reference to Ayurveda, Yoga and Philosophy**

Manoj Kumar Singh Chauhan 161-166
Dr. B.M.N Kumar

दार्शनिकी
DĀRŚANIKĪ

ISSN 2230 7435

दर्शनशास्त्र की वार्षिक शोध-पत्रिका

वर्ष - 15, जुलाई 2018-जून 2019

गांधी दर्शन विशेषांक

दर्शनशास्त्र विभाग

मानविकी संकाय

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ

वाराणसी

दार्शनिकी

DĀRŚANIKĪ

ISSN 2230 7435

वर्ष–15 (जुलाई 2018–जून 2019)

गांधी दर्शन विशेषांक

प्रधान सम्पादक

प्रोफेसर राजेश कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

कार्यकारी सम्पादक

डॉ० नन्दिनी सिंह

प्रकाशन समिति

प्रोफेसर शशि देवी सिंह
प्रोफेसर सभाजीत सिंह यादव
प्रोफेसर विष्णुदत्त पाण्डेय
डॉ० पितांम्बर दास
डॉ० आशुतोष त्रिपाठी

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय-विवरण	पृष्ठ संख्या
	सम्पादकीय	I-III
1.	सत्य : गांधी जी की दृष्टि में ♦ **प्रोफेसर शशि देवी सिंह**	1–4
2.	आज गांधी जी होते! ♦ **प्रोफेसर विष्णुदत्त पाण्डेय**	5–16
3.	गांधी जी अध्यात्म एवं एकादश व्रत ♦ **प्रोफेसर राजेश कुमार मिश्र**	17–24
4.	महात्मा गांधी और धर्म : सत्य तथा अहिंसा के परिप्रेक्ष्य में ♦ **डॉ० नन्दिनी सिंह**	25–29
5.	गांधी जी का नैतिक मानववाद एवं ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त ♦ **डॉ० पिताम्बर दास**	30–40
6.	गांधी पर पश्चिम का प्रभाव एवं वैश्विक पटल पर गांधी का प्रभाव ♦ **डॉ० आशुतोष त्रिपाठी**	41–51
7.	गांधी–दर्शन में सत्य की अवधारणा ♦ **डॉ. हरिदत्त त्रिपाठी**	52–59
8.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अहिंसा एवं कर्मयोग पर आधारित ग्राम स्वराज्य की प्रासंगिकता ♦ **डॉ० प्रतिमा सिंह**	60–64
9.	गांधी जी के सर्वोदय विचार का वर्तमान युग में महत्व ♦ **सोनम गुप्ता**	65–70
10.	महात्मा गांधी का दर्शन ♦ **शशिभूषण प्रजापति**	71–75

दार्शनिकी

DĀRŚANIKI

ISSN 22[illegible]

U.G.C. Care Listed

दर्शनशास्त्र की वार्षिक शोध-पत्रिका

वर्ष - 19, जुलाई 2022-जून 2023

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

दार्शनिकी
DĀRŚANIKĪ

ISSN 2230 7435

U.G.C. Care Listed

वर्ष–19 (जुलाई 2022–जून 2023)

प्रधान सम्पादक
प्रोफेसर राजेश कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

कार्यकारी सम्पादक
डॉ० अम्बरीष राय
डॉ० आशुतोष त्रिपाठी

प्रकाशन समिति
प्रो० नन्दिनी सिंह
प्रो० पिताम्बर दास

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

अनुक्रमणिका

विषय-विवरण

क्र०सं०		पृष्ठ संख्या
	सम्पादकीय	I-IV
1	समष्टिगत कल्याण में योग की भूमिका ◆ प्रो० (डॉ०) सविता भारद्वाज	1–9
2	गीता : एक योगशास्त्र ◆ प्रो० राजेश कुमार मिश्र	10–18
3	वैश्विक न्याय की संकल्पना : जॉन रॉल्स और डॉ० अमर्त्य सेन के सन्दर्भ में ◆ प्रो० नन्दिनी सिंह	19–27
4	बौद्ध संस्कृति के विविध दार्शनिक आयाम ◆ डॉ० ममता सिंह	28–35
5	विशिष्टाद्वैतवेदान्त और भक्ति ◆ डॉ० अम्बरीष राय	36–41
6	देवता : एक दार्शनिक विश्लेषण ◆ डॉ० ममता गुप्ता	42–50
7	मानववाद की वैचारिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि ◆ डॉ० बिनोद कुमार सिंह	51–57
8	भगवद्गीता एवं गणेशगीता में वर्णित दार्शनिक तत्त्व : एक अध्ययन ◆ डॉ० विवेक कुमार	58–72
9	अद्वैत वेदान्त में जीव की स्वरूप की विवेचना ◆ डॉ० सरिता रानी	73–87
10	गांधी–अर्थनीति : वैश्वीकरण से वसुधैव कुटुम्बकम् तक ◆ डॉ० प्रतिमा सिंह	88–95
11	काश्मीरी शैव परम्परा में मल अर्थात् बन्धन की अवधारणा ◆ डॉ० पूजा कुमारी	96–106
12	श्रीअरविन्द के दर्शन में चेतना एक विमर्श ◆ डॉ० अमृतलाल विश्वकर्मा	107–111

दार्शनिकी

DĀRŚANIKĪ

UGC Referred Journal No. 47891

ISSN 2230 7435

दर्शनशास्त्र की वार्षिक शोध-पत्रिका

वर्ष - 14, जुलाई 2017-जून 2018

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

दार्शनिकी

DĀRŚANIKĪ

ISSN 2230 7435

UGC Refereed Journal No. : 47891

वर्ष 14 (जुलाई 2017–जून 2018)

प्रधान सम्पादक

प्रोफेसर राजेश कुमार मिश्र
अध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

कार्यकारी सम्पादक

डॉ० पितामबर दास

प्रकाशन समिति

प्रोफेसर शशि देवी सिंह
प्रोफेसर सभाजीत सिंह यादव
प्रोफेसर विष्णुदत्त पाण्डेय
डॉ० नन्दिनी सिंह
डॉ० आशुतोष त्रिपाठी

दर्शनशास्त्र विभाग

मानविकी संकाय

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

11. महायान में बोधिसत्त्व की अवधारणा — 74—87
डॉ0 रमेश चन्द

12. धर्मपरिवर्तन तथा धर्मनिरपेक्षता : पुनर्विश्लेषण — 88—93
डॉ0 विवेक कुमार पाण्डेय

13. धार्मिक अनुभूति : एक ज्ञानमीमांसीय आवश्यकता — 94—98
डॉ0 अनूपपति तिवारी

14. जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार मनोवैज्ञानिक मूल्य : एक अनुशीलन — 99—104
डॉ0 शारदा कुसुम मिश्र

15. धम्मपद में नीति—तत्त्व विमर्श — 105—110
डॉ0 आशुतोष त्रिपाठी

16. सामाजिक आर्थिक परिवेश में नारी की भूमिका : एक गांधीवादी चिन्तन — 111—120
डॉ0 आनन्द शंकर तिवारी

17. तर्कपंचानन अभयदेवसूरि कृत बौद्ध प्रमाण—लक्षण का खण्डन — 121—126
डॉ0 प्रतिमा सिंह

- दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यापकों की सूची — 127
  (क) पूर्व अध्यापकों की सूची
  (ख) वर्तमान अध्यापकों की सूची
- दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यापकों द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की सूची — 128—132
- दार्शनिकी शोध—पत्रिका के पूर्व अंकों का विवरण — 133
- दार्शनिकी शोध—पत्रिका में प्रकाशित लेखों का विवरण — 134—142
- दार्शनिकी शोध—पत्रिका के आजीवन सदस्यों की सूची — 143—145

दार्शनिकी
DĀRŚANIKI

ISSN 2230-7435

U.G.C. Care Listed

दर्शनशास्त्र की वार्षिक शोध-पत्रिका

वर्ष - 19, जुलाई 2022-जून 2023

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

दार्शनिकी
DĀRŚANIKĪ

ISSN 2230 7435

U.G.C. Care Listed

वर्ष–19 (जुलाई 2022–जून 2023)

प्रधान सम्पादक
प्रोफेसर राजेश कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

कार्यकारी सम्पादक
डॉ० अम्बरीष राय
डॉ० आशुतोष त्रिपाठी

प्रकाशन समिति
प्रो० नन्दिनी सिंह
प्रो० पिताम्बर दास

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी संकाय
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विषय-विवरण	पृष्ठ संख्या
	सम्पादकीय	I-IV
1	समष्टिगत कल्याण में योग की भूमिका **♦ प्रो0 (डॉ0) सविता भारद्वाज**	1–9
2	गीता : एक योगशास्त्र **♦ प्रो0 राजेश कुमार मिश्र**	10–18
3	वैश्विक न्याय की संकल्पना : जॉन रॉल्स और डॉ0 अमर्त्य सेन के सन्दर्भ में **♦ प्रो0 नन्दिनी सिंह**	19–27
4	बौद्ध संस्कृति के विविध दार्शनिक आयाम **♦ डॉ0 ममता सिंह**	28–35
5	विशिष्टाद्वैतवेदान्त और भक्ति **♦ डॉ0 अम्बरीष राय**	36–41
6	देवता : एक दार्शनिक विश्लेषण **♦ डॉ0 ममता गुप्ता**	42–50
7	मानववाद की वैचारिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि **♦ डॉ0 बिनोद कुमार सिंह**	51–57
8	भगवद्गीता एवं गणेशगीता में वर्णित दार्शनिक तत्त्व : एक अध्ययन **♦ डॉ0 विवेक कुमार**	58–72
9	अद्वैत वेदान्त में जीव की स्वरूप की विवेचना **♦ डॉ0 सरिता रानी**	73–87
10	गांधी–अर्थनीति : वैश्वीकरण से वसुधैव कुटुम्बकम् तक **♦ डॉ0 प्रतिमा सिंह**	88–95
11	काश्मीरी शैव परम्परा में मल अर्थात् बन्धन की अवधारणा **♦ डॉ0 पूजा कुमारी**	96–106
12	श्रीअरविन्द के दर्शन में चेतना एक विमर्श **♦ डॉ0 अमृतलाल विश्वकर्मा**	107–111

गांधी–अर्थनीति : वैश्वीकरण से वसुधैव कुटुम्बकम् तक

***डॉ0 प्रतिमा सिंह**

सारांश

गांधी जी का दर्शन इस अर्थ में सर्वथा अद्वितीय, आदरणीय एवं अनुकरणीय है कि वह वास्तव में विचार मात्र न होकर एक संकल्प है। सम्पूर्ण मानवता के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक जागृति का संकल्प। इस विश्व के सोऽहम से तत्त्वमसि तक की अद्वैत सत्य की यात्रा का संकल्प। दुःख से संतृप्त इस विश्व में भातृत्व की भावना, शोषक एवं शोषित में बँटे समाज में मनुष्यता को सर्वोच्च स्थान, भौतिकतावादी मानवता की आत्मिक उन्नति का प्रयास, मनुष्य को यंत्रमात्र समझने वाले उद्योगीकरण से उपजी वर्तमान सभ्यता में मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयत्न ये सभी उसी महान संकल्प की पूर्ति के साधन है।

गांधी जी का पूर्ण विश्वास था कि विश्व में व्याप्त अशान्ति एवं अव्यवस्था के मूल में मनुष्य का अन्तःकरण ही कार्य करता है। वर्तमान युग का संकट नैतिक मूल्यों के ह्रास से उत्पन्न संकट है। अतः इस समस्या का एकमात्र समाधान नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना द्वारा अन्तःकरण के पुनर्जागरण में ही उन्हें दिखाई पड़ता है। यही कारण है कि सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सभी क्षेत्रों में नैतिकता की पुनर्स्थापना का प्रयास गांधी जी के समस्त विचारों के केन्द्र में था। आर्थिक भेद को मिटाने के लिए वे ट्रस्टीशिप, रोटी के श्रम, यान्त्रिकता का विरोध, अपरिग्रह तथा बौद्धिक एवं शारीरिक श्रम को समान महत्व आदि अद्‌भुत साधनों द्वारा निरन्तर प्रयास करते हैं।

मुख्य शब्द : ट्रस्टीशिप, माददी सुख, कोमलयन्त्र, रूहानी, विकेन्द्रीकरण, यान्त्रिकता, हस्तकौशल, कुटीर उद्योग।

साहित्यावलोकन :

प्रस्तुत शोध पत्र का आधार स्वयं महात्मा गाँधी कृत 'ग्राम स्वराज', मेरे सपनों का भारत, मंगल प्रभात, चरित्र और राष्ट्र निर्माण तथा उनकी आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोग है। इस शोध पत्र के लेखन में इसके अतिरिक्त डॉ0 जे0सी0 कुमारप्पा की कृति गाँधी अर्थ–विचार लुई फिशर की कृति A Week with Gandhi, विनोबा भावे द्वारा लिखित गांधी जी को श्रद्धांजलि, की सहायता ली गई है। शोध पत्र के कुछ अंशों की पूर्णता हेतु डॉ0 राम जी सिंह कृत गाँधी दर्शन मीमांसा को भी उद्धरण हेतु प्रयोग किया गया है।

*** असिस्टेंट प्रोफेसर, वसन्त कन्या महाविद्यालय, बी0एच0यू0, वाराणसी।**

शोध–पत्र का उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य विश्व में व्याप्त आर्थिक भेद तथा उससे उत्पन्न असमानताएँ, अव्यवस्था, अशान्ति एवं अनन्त समस्याओं का समाधान का प्रारूप प्रस्तुत करना है। एक विवेकहीन उद्योगीकरण तथा यांत्रिक उन्माद केन्द्रित वैश्विक अर्थव्यवस्था जहाँ मानवता, मानव कल्याण, मानवीय मूल्य के आदर्श का स्थान निर्धारण कठिन है। ऐसे विश्व की अर्थनीति में व्याप्त प्रमुख समस्याओं को यह शोध–पत्र रेखांकित करता है। साथ ही युग द्रष्टा गांधी जी की दृष्टि से उनके दर्शन से अर्थ नीति (अर्थ में नैतिकता) की स्थापना के कारक पर विमर्श को प्रस्तुत करते हुए। मानवता, मानव कल्याण, मानवीय मूल्य केन्द्रित वर्ग विभेद रहित अर्थव्यवस्था की स्थापना हेतु आवश्यक दृष्टि, आदर्श एवं आचरण को स्पष्टता के साथ प्रस्तुतिकरण का प्रयास किया गया है। इस विमर्श के केन्द्र में गांधी जी की दृष्टि इसलिए अधिक प्रासंगिक है क्योंकि गांधी जी विश्व के उन युग नायकों में से एक हैं जो समस्त विश्व की अन्तर्रात्मा की ही आवाज का अधिक परिष्कृत प्रासंगिक रूप है।[1]

प्रस्तावना :

वर्तमान समय में जब सम्पूर्ण विश्व वैश्वीकरण, विश्वबन्धुत्व, वैश्विक अर्थव्यवस्था जैसे समष्टि के आदर्श की प्रतिष्ठा के लिए प्राण प्रण से लगा हुआ है। इस विश्व में व्यष्टि तथा विभेद धर्म, अर्थ, रंग, वर्ग, लिंग, जाति के रूप में व्याप्त भेद सम्पूर्ण मानवता को विभाजित कर उनके सर्वोच्च आदर्श को तिरोहित करने का मार्ग प्रशस्त करता हुआ दिख रहा है। समाज का एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को एक वर्ग दूसरे वर्ग को एवं एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को स्वयं की उन्नति हेतु साधन के रूप में देख रहा है। इस वैश्विक परिदृश्य में समस्त भेदों से ऊपर मानव एवं मानव कल्याण को स्थापित करने के लिए गांधी जी कहते हैं कि उनके समाजवाद में राजा और प्रजा, धनी और गरीब, मालिक और मजदूर सब बराबर है। इस तरह समाजवाद यानी अद्वैतवाद। उसमें द्वैत या भेदभाव की गुंजाइश ही नहीं है। सारी दुनिया में समाज पर नजर डाले तो हम देखेंगे कि हर जगह द्वैत ही द्वैत है। एकता या अद्वैत कहीं नाम को भी नहीं दिखाई देता। वह आदमी ऊँचा है, वह आदमी नीचा है। वह हिन्दू है, वह मुसलमान है, तीसरा ईसाई है, चौथापारसी है, पाँचवा सिक्ख है, छठा अद्वैत में ये सब लोग एक हो जाते हैं, एक में समा जाते हैं।[2]

गांधी जी के सम्पूर्ण दर्शन समस्त विमर्श के मूल में एक ही संकल्प एक ही आदर्श अन्तर्निहित है। सम्पूर्ण मानवता के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक जागृति के संकल्प द्वारा इस विश्व के सोऽहम से तत्त्वमसि तक की अद्वैत सत्य के प्राप्ति की यात्रा। गांधी जी का दृढ़ विश्वास है कि मानवीय मूल्यों की आधारभूमि

पर ही मानव अंतःकरण में अद्वैत भाव की प्रतिष्ठा द्वारा व्यष्टि एवं समष्टि की आत्मा को एकाकार कर वास्तविक अर्थों में विश्वबन्धुत्व की स्थापना संभव है। ऐसा विश्व ही वह विश्व होगा जहाँ मनुष्यता अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ प्रतिष्ठित होगी।

गांधी जी के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक विचारों में यही संकल्प तथा आदर्श अन्तर्निहित है। उसका सम्पूर्ण दर्शन मानवीय मूल्यों की स्थापना से आत्मशुद्धि द्वारा समस्त भेद तथा द्वैत को समाप्त करते हुए। वास्तविक अर्थों में जीवमात्र का ऐक्य साधकर अद्वैत भाव द्वारा विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना है। इस सन्दर्भ में गाँधीजी कहते हैं "बिना आत्मशुद्धि के जीवनमात्र के साथ ऐक्य सध ही नहीं सकता। आत्मशुद्धि के बिना अहिंसा धर्म का पालन सर्वथा असंभव है। जीवन मार्ग के सभी क्षेत्रों में शुद्धि की आवश्यकता है। यह शुद्धि साध्य है, क्योंकि व्यष्टि और समष्टि के बीच ऐसा निकट का सम्बन्ध है कि एक ही शुद्धि अनेकों की शुद्धि के बराबर हो जाती है।[3]

गांधी–अर्थनीति :

आज का विश्व अर्थ केन्द्रित, यंत्रमुग्ध, औद्योगीकरण से उत्पन्न सभ्यता से निर्मित एक ऐसा विश्व है। जो कि अर्थ एवं शक्ति के केन्द्रीकरण से उत्पन्न वर्ग भेद, शोषक–शोषित, गरीब–अमीर, मालिक तथा मजदूर आदि सर्व व्याप्त समस्या से ग्रस्त है। तथा इस प्रकार वैश्विक अर्थव्यवस्था, वैश्वीकरण के संकल्प से प्रतिबद्ध सम्पूर्ण मानवता के समक्ष कुछ ऐसे यक्ष प्रश्न और समस्या को उपस्थित कर रहा है जिसका समाधान निश्चय ही सम्पूर्ण मानवता के लिए एक बड़ी चुनौती है।

गांधी जी की अर्थनीति में नैतिकता प्रमुख है। मनुष्य की कमाई का उद्देश्य भौतिक विलास न होकर आत्मिक उन्नति है। उनके आर्थिक विचार का उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना है जिसमें एक दूसरे का शोषण न हो जिसमें शोषक के बल पर कुछ लोग उच्च भौतिक रहन–सहन बिताते हो। गांधी जी का ऐसा विश्वास था कि आर्थिक क्षेत्र में भी शोषण की वृत्ति का तब तक अन्त नहीं हो सकता जब तक कि समाज और व्यक्ति में पूर्णरूप से नैतिक भावना का विकास नहीं होता। जब तक हम यह महसूस न करने लगे कि दूसरा हमारा भाई है। उसकी आवश्यकता से अधिक एकत्र करना अनैतिक है।[4]

गांधी जी का दृढ़ विश्वास है कि आवश्यकता का निर्माण सदैव संतोष, अपरिग्रह, संयम से युक्त अन्तरमन से होना चाहिए। उनका ऐसा मानना है कि समस्त बुराईयों के मूल में अन्तःकरण ही कार्य करता है। इसीलिए वे एक ओर जहाँ श्रम और बुद्धि को समान महत्व प्रदान करते हैं तो वहीं दूसरी ओर समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को ट्रस्टीशिप, कुटीर उद्योग आदि के माध्यम से दूर करने

का प्रयास करते हैं, इसीलिए गांधी जी कहते हैं सही सुधार सच्ची सभ्यता का लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि सोच समझकर और अपनी इच्छा से उसे कम करना है।[5] उनका ऐसा मानना है कि अपनी संयमित जरूरत से अधिक मनुष्य जो कुछ भी लेता है, वह चोरी का ही लेता है। अतः आवश्यक है कि मनुष्य को इस स्वकेन्द्रित, संकुचित, स्वार्थी दृष्टि को त्याग कर मनुष्य को गौरवान्वित करने वाले मनुष्य को संयम, संतोष, अस्तेय एवं अपरिग्रह आदि गुणों का पालन करते हुए अपनी दृष्टि को व्यापक कर वास्तविक अर्थों में मनुष्य बने। इसी को इंगित करते हुए गांधी जी कहते हैं कि मनुष्य सारी दुनिया को जीत ले, परन्तु अपनी आत्मा को खो दे, तो उससे क्या कल्याण हो सकता है। आधुनिक भाषा में कहें तो मनुष्य अपना व्यक्तित्व खो दे और यंत्र की एक जड़ कील की भाँति बन जाये, तो उसके मानवीय गौरव के लिए चीज कलंक रूप होगी।[6]

वास्तव में गांधी जी की दृष्टि में मनुष्य और मनुष्यता सर्वोपरि है। अपने सम्पूर्ण गौरव के साथ तथा यंत्र उद्योग भौतिक संसाधन, सामाजिक व्यवस्था आदि सभी उसके साधन मात्र है।

अतः गांधी जी किसी भी आधार पर मानव समाज में व्याप्त भेदभाव के सख्त विरोधी हैं। उसके समाज में सभी मनुष्य समान है। वे इस विषय में कहते हैं ''मैं ऐसी स्थिति लाना चाहता हूँ जिसमें सबका सामाजिक दरजा समान माना जाए। ''आज मालिक–मजदूर का भेद सर्वव्यापक और स्थायी हो गया है। अगर सब रोटी के लिए श्रम करें तो ऊँच–नीच का भेद न रहे, और फिर भी धनिक वर्ग रहेगा तो वह खुद को मालिक नहीं बल्कि धन का रक्षक या ट्रस्टी मानेगा और उसका ज्यादातर उपयोग लोगों की सेवा के लिए ही करेगा।[7]

गांधी जी के सपनों का समाज एक ऐसा समाज है जहाँ प्रत्येक मनुष्य की योग्यता के अनुसार उसे कमाने का समान अवसर प्राप्त हो। सभी व्यक्ति में समान योग्यता का होना एक असंभव कल्पना है। अतः व्यक्ति को उसके बुद्धि, बल के अनुसार संभावनाएँ प्राप्त हो सके। गांधी जी सहज रूप से यह स्वीकार करते हैं कि कुदरत की रचना ही ऐसी है कि कुछ लोगों के अधिक कमाने और दूसरे में उनसे कम कमाने की योग्यता होगी। बुद्धिशाली लोग अधिक कमायेंगे और वे इसका उपयोग दया भाव से करें, तो वे राज्य का ही काम करेंगे। गांधी जी बल देकर कहते हैं कि मैं बुद्धिशाली मनुष्य को अधिक कमाने दूंगा और उसकी बुद्धि को कुंठित नहीं करूंगा।

इस प्रकार गांधी जी योग्यता के अनुसार सभी को समान अवसर प्रदान कर जहाँ सर्व सहभागिता की बात करते हैं तो वहीं आवश्यकता से अधिक अर्जित सम्पत्ति को सर्वकल्याण हेतु उपयोग करने की वकालत करते हुए समाज में व्याप्त भेद एवं संघर्ष की समाप्ति का सर्वश्रेष्ठ मार्ग प्रस्तुत करते हैं। और इस प्रकार

गांधी जी एक ऐसे जाति विहीन और वर्ग विहीन समाज का चित्र प्रस्तुत करते हैं जिसमें न कोई ऊँचा है न कोई नीचा है। सारे काम एक से हैं और सारे कामों की मंजूरी भी एक जैसी है। ऐसे समाज में व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र का चयन व्यक्तिगत उन्नति की लालसा से न करके सर्व कल्याण सर्वोदय के लिए करते हुए आत्मोन्नति को प्राप्त होगा। ऐसा व्यक्ति 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' और वसुधैव कुटुम्बकम की मंगलकामना से समस्त कार्य को करेगा।

ये वो भावना है जो भारतीय संस्कृति के मूल में है। 'सर्वभूत हिते रता'[8] 'वसुधैव कुटुम्बकम्'[9] या 'सर्वेभवन्तु सुखिनः'[10] आदि। उपनिषद–वेदान्त और गीता में आत्मौपक्यः[11] साम्य या एकत्व की भावना में सर्वोदय की झलक मिलती है।[12] यही भावना समाज के समस्त व्यक्तियों के समस्त मनसा, वाचा, कर्मणा के मूल में होगी।

गांधी जी समाज में समानता की स्थापना के लिए जितने प्रतिबद्ध हैं उतने ही सतर्क। समाज में मनुष्य की योग्यता को उचित स्थान एवं सम्मान प्रदान करने को लेकर भी है। वे जोर देकर कहते हैं कि हम ऐसी जड़ समानता का निर्माण नहीं करना चाहते, जिसमें कोई मनुष्य अपनी योग्यताओं का पूरा उपयोग कर ही न सके ऐसा समाज अन्त में नष्ट हुए बिना नहीं रह सकता।[13] इसीलिए गांधी जी सदैव बौद्धिक कार्य, शारीरिक श्रम को भी बौद्धिक श्रम जितना ही महत्वपूर्ण मानते हैं। यद्यपि कई स्थानों पर समुचित तर्कों द्वारा मनुष्य के जीवन में शारीरिक श्रम को देखते हुए वे कहते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य का निर्माण श्रम द्वारा अपना भोजन प्राप्त करने के लिए किया और कहा कि श्रम किये बिना जो खाते हैं वे चोर हैं।[14] वे शारीरिक श्रम की अपरिहार्यता को प्रदर्शित करने के लिए कहते हैं रोटी के लिए हर एक मनुष्य को मजदूरी करनी चाहिए, शरीर को झुकाना चाहिए, यह ईश्वर का कानून है।[15]

शारीरिक श्रम का महत्व :

गांधी जी वैश्विक व्यवस्था के लिए श्रम एवं आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं वे कहते हैं कि यदि सब लोग अपने ही परिश्रम की कमाई खायें, तो दुनिया में अन्न की कमी न रहे और सबको काफी अवकाश भी मिले। तब न किसी को जनसंख्या की वृद्धि की शिकायत रहे, न कोई बीमारी आये और न किसी मनुष्य को कष्ट या कलेश ही सताये। इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्य अपने शरीर या बुद्धि के द्वारा और काम भी करे पर उनका सब श्रम लोग कल्याण के लिए किया जाने वाला प्रेम का श्रम होगा। उस अवस्था में न कोई राजा होगा न कोई रंक। न कोई ऊँच होगा न कोई नीच, न कोई स्पृश्य रहेगा न कोई अस्पृश्य।[16] इस प्रकार गांधी जी वैश्विक अर्थव्यवस्था को अधिकार केन्द्रित

अर्थव्यवस्था से कर्तव्य केन्द्रित अर्थव्यवस्था की ओर तथा स्वार्थ से परार्थ की ओर भोग से त्याग की ओर ले जाना चाहते हैं। वास्तव में गांधी जी के समस्त अर्थव्यवस्था के विमर्श के केन्द्र में मनुष्य का गौरव उसका कल्याण और उसकी सर्वोच्च स्थिति की प्रतिष्ठा है तथा इसी उद्देश्य की प्रतिपूर्ति हेतु वे विवेकहीन उद्योगीकरण तथा यांत्रिक उन्माद की भी आलोचना करते हैं। उनका ऐसा मानना है कि उद्योगीकरण पूंजी, शक्ति एवं उपभोग के केन्द्रीकरण के मूल में है। वे इसे विश्व में व्याप्त शोषण, वर्गभेद, गरीबी, मानवीय मूल्यों के ह्रास का भी कारण मानते हैं। वे बलपूर्वक कहते हैं कि यदि हम मशीन को स्थान देकर मानव शक्ति और कला को निरर्थक बनाते हैं तो हम मानवता के साथ घोर अन्याय करते हैं। हम जो भी काम करें उसमें मुख्य विचार मानव के कल्याण का ही होना चाहिए।[17]

साधन, साध्य और विमर्श :

वास्तव में गांधी जी उद्योगीकरण तथा यंत्रीकरण के विरोधी न होकर मनुष्य को यंत्रमात्र समझने वाली उद्योगीकरण से उपजी वर्तमान अर्थव्यवस्था के विरोधी हैं। इस संदर्भ में अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि 'मैं यंत्र का यंत्र के रूप में विरोधी नहीं हूँ। ऐसा मैं भला कैसे कर सकता हूँ, जबकि मैं यह जानता हूँ कि मनुष्य का शरीर भी एक अति जटिल किन्तु कोमल यंत्र के सिवा कुछ भी नहीं है। चरखा भी तो एक प्रकार का यंत्र ही है, फलतः मेरा विरोध यंत्र से नहीं उस उन्माद से है, जो यंत्रों के लिए उत्पन्न हो गया है।[18] लोग अगर यंत्र की झंझट में पड़ेंगे तो गुलाम बनेंगे और अपनी नीति को छोड़ देंगे।[19] यंत्र सदैव साधन हो, साध्य कभी नहीं।

अतः हम कह सकते हैं कि गांधी जी की दृष्टि में यंत्र तथा उद्योग मानव कल्याण के साधन हैं गांधी जी उनके साध्य बन जाने का विरोध करते हैं। वे यंत्र के मनुष्य का स्वामी बनने के विरुद्ध है। गांधी जी यान्त्रिकता का विरोध करके शक्ति एवं पूंजी का विकेन्द्रीकरण, हस्तकौशल की रक्षा, शोषणहीन एवं वर्गविहीन समाज की स्थापना, सर्वोदय (सभी का उदय)[20], मानवता को सर्वोच्च स्थान आदि लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहते थे।

निष्कर्ष :

वर्तमान अर्थकेन्द्रित विश्व, यंत्रमुग्ध उद्योगीकरण, अर्थ एवं शक्ति के केन्द्रीकरण से उत्पन्न वर्ग भेद, शोषक, शोषित, गरीब–अमीर, मालिक मजदूर, आदि सर्व व्याप्त समस्या से ग्रस्त है। युगद्रष्टा गांधी जी का यह दृढ़ विश्वास है कि इन समस्त समस्या के मूल में मानवीय मूल्यों की कमी ही एक मात्र कारण है। जिसके कारण हमने अर्थ एवं शक्ति को साध्य बना लिया है। हमारे लिए व्याष्टि समष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हो गयी है। हमारे स्व केन्द्रित, संकुचित स्वार्थी दृष्टि

ने मानव कल्याण एवं मनुष्यता के गौरव को निचले पायदान पर धकेल दिया है। अतः आवश्यकता है ऐक्य ऐसे समाज की जहाँ मानवीय मूल्यों की स्थापना से आत्मशुद्धि द्वारा समस्त भेद तथा द्वैत को समाप्त करते हुए वास्तविक अर्थों में जीवमात्र का ऐसा ऐक्य सध सके साथ ही विश्वबन्धुत्व का मार्गानुसरण कर वसुधैव कुटुम्बकम् के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

संदर्भ :

1. फिशर, लुई. : *A week with Gandhi*, George Allen and Unwin Ltd London, 1943 p. 122
2. गांधी, महात्मा : *मेरे सपनों का भारत*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–221001, पृ0 29
3. गांधी, महात्मा : *सत्य के साथ मेरे प्रयोग*, प्रभात पेरवैक्स, अब तक अली रोड, नई दिल्ली–110002, पृ0 215
4. कुमारप्पा, जे0सी0 : *गांधी अर्थ–विचार*, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–221001, पृ0 57
5. गांधी, महात्मा : *चरित्र और राष्ट्रनिर्माण*, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–280014, पृ0 11
6. गांधी, महात्मा : *ग्राम स्वराज्य*, डायमण्ड पॉकेट बुक्स लि, ओखला, नई दिल्ली–110020, 2013, पृ0 34
7. गांधी, महात्मा : *ग्राम स्वराज्य*, डाण्मण्ड पॉकेट बुक्स लि0, ओखला, नई दिल्ली–110020, 2013, पृ0 58
8. *गीता प्रबोधनी*, 12.4, गीताप्रेस गोरखपुर–263004, पृ0 273
9. शर्मा, आचार्य श्रीराम : *108, उपनिषद्*, महोपनिषद, छठा अध्याय, 71वाँ श्लोक, संस्कृति संस्थान, बरेली, उ0प्र0, 1961, पृ0 268,
10. *बृहदारण्य उपनिषद्*, गीता प्रेस गोरखपुर–263004, पृ0 214
11. *गीता प्रबोधिनी*, 6.32, गीता प्रेस गोरखपुर–263004, पृ0 134
12. भावे, विनोवा : *गांधी जी को श्रद्धांजलि*, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1948, पृ0 14
13. गांधी, महात्मा : *ग्राम स्वराज्य*, डायमण्ड पॉकेट बुक्स लि0 ओखला, नई दिल्ली–110020, 2013, पृ0 66
14. गांधी, महात्मा : *ग्राम स्वराज्य*, डायमण्ड पॉकेट बुक्स लि0 ओखला, नई दिल्ली–110020, 2013, पृ0 51
15. गांधी, महात्मा : *मंगल–प्रभात*, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–14, 1948, पृ0 34
16. गांधी, महात्मा : *चरित्र और राष्ट्रनिर्माण*, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–14, 2004, पृ0 59
17. गांधी, महात्मा : *ग्राम स्वराज्य*, डायमण्ड पॉकेट बुक्स लि0, ओखला, नई दिल्ली–110020, 2013, पृ0 49

18. वही, पृ0 35
19. गांधी, महात्मा : *हिन्द स्वराज्य*, शिक्षा भारती, 1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006, 2017, पृ0 45
20. सिंह, रामजी : *गांधी–दर्शन–मीमांसा*, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी सम्मेलन, भवन, पटना–800003, 2002, पृ0 31

♦♦♦♦♦